

## **Aarti Kunj Bihari Ki Lyrics in Hindi**

आरती कुंजबिहारी की,  
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥  
आरती कुंजबिहारी की,  
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

गले में बैजंती माला,  
बजावै मुरली मधुर बाला ।  
श्रवण में कुण्डल झलकाला,  
नंद के आनंद नंदलाला ।  
गगन सम अंग कांति काली,  
राधिका चमक रही आली ।  
लतन में ठाढ़े बनमाली  
भ्रमर सी अलक,  
कस्तूरी तिलक,  
चंद्र सी झलक,  
ललित छवि श्यामा प्यारी की,  
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥  
॥ आरती कुंजबिहारी की... ॥

कनकमय मोर मुकुट बिलसै,  
देवता दरसन को तरसैं ।  
गगन सों सुमन रासि बरसै ।  
बजे मुरचंग,  
मधुर मिरदंग,  
ग्वालिन संग,  
अतुल रति गोप कुमारी की,  
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥  
॥ आरती कुंजबिहारी की... ॥

जहां ते प्रकट भई गंगा,  
सकल मन हारिणि श्री गंगा ।  
स्मरन ते होत मोह भंगा  
बसी शिव सीस,

जटा के बीच,  
हरै अघ कीच,  
चरन छवि श्रीबनवारी की,  
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥  
॥ आरती कुंजबिहारी की... ॥

चमकती उज्ज्वल तट रेनू,  
बज रही वृंदावन बेनू ।  
चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू  
हंसत मृदु मंद,  
चांदनी चंद,  
कटत भव फंद,  
टेर सुन दीन दुखारी की,  
श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥  
॥ आरती कुंजबिहारी की... ॥

आरती कुंजबिहारी की,  
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥  
आरती कुंजबिहारी की,  
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

**READ FULL LYRICS : [Aarti Kunj Bihari Ki Lyrics in Hindi](#)**